

पद १६०

(राग: झिंजोटी - ताल: धुमाळी)

हम असंग चेतन सांई ये दुःख प्रवाह हम संग नाहीं ॥धु. ॥ हम
आकाश नित जग को आधारा। अचानक मेघ उठत जलधारा।
दिखत छुपत अंधियार उजाला। हम न किए न मिटाई। ये दुःख
प्रवाह हम संग नाहीं ॥१॥ इह संसार खिलौना मन का। मन कंजाल
है चेतन जल का। जल की न हानि न लाभ है तिनका। जूं नट
दीप नचाई। ये दुःख प्रवाह हम संग नाहीं ॥२॥ जल चाहत नहीं
तरंग फेसा। घटत बढत जूं दिन दिन सांसां। होत जात भूतन में
तमासा। हम न रिझे न रिझाई। ये दुःख प्रवाह हम संग नाही ॥३॥
आद ब्रह्म गुरु मानिक हंसा। सो गुरु चिन्मार्ताण्ड प्रकासा।
निराकार अरु दे उपदेसा। ये चेतन चतुराई ॥४॥ पद १६१